साथण

आपणो ढूँढाड़ आपणी संस्करति

अक्टूम्बर सूँ दिसम्बर 2023

संपादक :-
पूरण मल बैरवा अर रामजी लाल बैरवा

सहयोगी :-
मुकेश कुमार योगी एवं कविता योगी

टाईपसेटिंग: पूरण मल बैरवा

सम्पर्क
निर्माण सोसायटी
वार्ड नं. 6, तकिया मस्जिद के पास, काली हवेली के पीछे,
देशवालियों का मोहल्ला, चाकसू, जयपुर, राजस्थान-303901
Ph.-01429-243997, 9982668204, 9887748510
Email- rajasthanlanguages@nirmaan.org.in
Web- www.dhundari.org.in, www.nirmaan.org.in

जीवा-अमरत

पराकरतीक खेती मै जीवा-अमरत घणो काम करै छै। जीवा-अमरत कोई खाद कोनै यो तो पोधा नै बढाबा कै तोड़ी छोटा-छोटा जींवा नै पोसण दे छै जिसूँ साख चोखी है छै। अपणी साख नै नरोगी करबा अर जोरकी करबा कै तोड़ी थाँ सगळा नै जीवा-अमरत बणार देणो चाईजे। आओ आपा ईनै बणाबा अर देबा का बारा मै ओर जादा सीखाँ...।

जीवा-अमरत बणाबा की सामग्री

200 लिटर जीवा-अमरत बणाबा कै तोड़ी ये सारी चीजाँ हैबो जरूरी छै।

- 10 किलो देसी गाई को गोबर
- 5-6 लीटर देसी गाई को मूत
- 2 किलो गुड़ या 4 लीटर साँटा को रस
- 2 किलो बेसण या दाळ को चून (चणा, चूँळा, मोठ, आरेड़, मूँग)
- 1 मुठ्ठी गार (पोदाँ की जड़ा कै साँकड़ै की गार)

जीवा-अमरत कियाँ बणावाँ

- 1.एक एकड़ जमी के तोड़ी कम सूँ कम 200 लीटर को बर्तन (लोया या सीमट की टंकी) लेल्यो। ऊँका पीन्दा कै साँकड़ै एक ठेकलो कर टूँटी लगा द्यो। पहली टूँटी कै 9 इंच उपरै एक ओर ठेकलो कर और एक टूंटी लगा द्यो। फेर दूसरी टूँटी कै 9 इंच उपरै एक और ठेकलो कर एक टूँटी ओर लगा द्यो। अब इमै जिवा अमरत त्यार करो।
- टंकी मै 200 लीटर मीठो पाणी भरल्यो। (खारो पाणी मत लिज्यो)
- 5 सूँ 10 लीटर गाई को मूत मलाद्यो।
- 10 कीलो देसी गाई को गोबर मलार गोळ-गोळ हलावै।
- 2 कीलो गुड़ या 4 लीटर साँटा को रस मलावो।
- 1 या 2 किलो बेसण या दाळ को चून मलाद्यो।
- एक मुठ्ठी खेत की मेर या जंगळ का पोदा की जड़ा कै चपकैड़ी गार ल्यार मलाद्यो।
- याँ सगळा नै 200 लीटर पाणी की टंकी मै मलार घाडा घोळ ल्यो।
- बोरी सूँ ढकर 2 दन यानी 48 घण्टा तक छाया मै मेलद्यो। (चोमासा अर ऊन्दाळा मै 48 घण्टा अर स्याळा मै 4 दन यानी 96 घण्टा राँखणो छै)
- रोजिना स्याम सुँवारैई लकड़ी का डंडा सूँ एक मिनट तक गोळ-गोळ (घड़ी की सुई घूमै जियाँ) धीरै-धीरै हलावो।
- ईं टंकी नै बरखा का पाणी, तावड़ा, बाळकाँ अर ढाण्डा सूँ बचार राँखणो छै।
- 7 सूँ 12 दन कै बीच मै काम मै लोवा सूँ जादा काम करैलो। ईं जीवा-अमरत नै बण्याँ पाछै 15 दन तक काम ले सकै छै।
- जीं दन जीवा-अमरत देणो छै उकै 24 घण्टा पहली सूँ घोळबो बन्द करद्यो। सगळा जीवाणूँ पीन्दा मै भेळा हैज्याला। ऊँकै ऊपरै जीवता जीवाणूँ तरता रहवैला। 24 घण्टा पाछै पीन्दा सूँ 9 इंच ऊपरै की टूँटी खोलर थोड़ो सोक पाणी नखाळ ले। बाद मै ईं पाणी नै 200 लीटर की दूसरी टंकी मै घालर 180 लीटर पाणी भरद्यो। अब थाँनै गुड़ बेसण घालबा की जुरत कोनै ईं पाणी सूँ थे ओर जीवा-अमरत बणा सको छो।

जीवा-अमरत देबा को तरीको

- साक मै पाणी देबा की टेम धोरा मै या फेर चाठा (जीमै सूँ खेत मै पाणी जावै छै) मै एक टूँटी की टंकी या फेर एक पातो लेल्यो जींका पीन्दा मै एक छोटो ठेकलो कर ऊँकै एक टींटको फोद्यो जीसूँ धोरा का पाणी मै टोपो-टोपो पाणी पड़तो रहवैलो अर घुळतो रहवैलो।

- 1.कोठी सूँ सीदो खेत मै पाणी देवै ज्याँ किसाना नै टंकी मै सूँ एक छोटी नळकी लगार ऊँ पाईप मै जोड़द्यो ज्यो कोठी मै सूँ नखर्यो छै, ताकि जीवा-अमरत सीदो क्यारी मै जार पोदाँ की जड़ा मै रम ज्यालो।

जीवा-अमरत देबा को तरीको

- जीवा-अमरत एक मीना मै 2 बार देणो चाईजे (सादा फसल मै 200 सूँ 400 लीटर अर बागवानी मै 400 सूँ 800 लीटर)

- खड़ी साख मै फूँवारा सूँ भी छड़क सको छो। पण बागवानी मै सीदा जमी मै पोदा की जड़ा मै पटको जादा लाभ देवै छै।

मुहावरा

गुँठो दखाबो।
अर्थ = समय पर इंकार कर देना।
वाक्य में प्रयोग :- बाबूलाल तो गोपी नै एनटेम पै गुँठो दखा दियो।

गूलर को फूल हैबो।
अर्थ = दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु।
वाक्य में प्रयोग :- कल्याण तो गूलर को फूल ही हैग्यो।

कावताँ

- चोरी को धन मोरी मै।
  अर्थ - हराम की कमाई बेकार जाती है।
- च्यार दन की चाँदनी, फेर अन्देरी रात।
  अर्थ -अच्छे दिन कम ही आते है।
- छछूँदर का माथा मै चमेली को तेल।
  अर्थ - अयोग्य व्यक्ति को अच्छी चीज़ देना।
- छीकै कुण अर नाक कटाव कुण।
  अर्थ - किसी के दोष का फल कोई दूसरा भोगे।

प्रकाशक
निर्माण सोसायटी, चाकसू